डॉ. सुशील अग्रवाल

उत्तरायण और मकर संक्रांति की भ्रांति

हर वर्ष की तरह जनवरी-2016 में भी, सूर्य देवता के मकर राशि में प्रवेश करते ही, भारत में मकर संक्रांति बड़ी धूम-धाम से मनाई जायेगी और हर वर्ष की तरह एक-दूसरे को फोन पर और WhatsApp आदि पर शुभकामनाएं देने का तांता सा लग जायेगा। मकर संक्रांति की महत्ता फसलों के त्यौहार से अधिक उत्तरायण की शुरूआत के लिये मानी जाती रही है और इसकी पुष्टि अनेक पुस्तकों और लेखों में होती रही है।

आइये, मिलकर इस विषय पर मनन करें और स्वयं निष्कर्ष पर पहुंचें कि क्या उत्तरायण और मकर संक्रांति एक ही समय से शुरू होती हैं?

संक्रांति की परिभाषा

भचक्र को 12 बराबर भागों में बांटा गया है और इसका प्रत्येक भाग एक राशि का प्रतिनिधित्व करता है। निरयन पद्धति के अनुसार 22 March 285 AD को चित्रा नक्षत्र से 180^0 00'03" (Lahiri's Indian Ephemeris of Planets' Positions for 2015 A D) पर मेष राशि की प्रथम बिंदु माना गया था। सूर्य अपनी दैनिक औसत गति 1^0 से चलते हुए, प्रत्येक माह मध्य में नयी राशि में प्रवेश, करते हैं। यही सूर्य का राशि प्रवेश सूर्य संक्रांति कहलाता है। अर्थात, साल में बारह संक्रांति होती हैं जैसे मेष संक्रांति, वृषभ संक्रांति इत्यादि और इसी श्रृंखला में दसवें स्थान पर आती है मकर संक्रांति।

हिन्दू कैलेण्डर का आधार चन्द्रमा की स्थिति से है और उसके अनुसार आजकल मकर संक्रांति का पर्व पौष मास में आता है। इस बात की पुष्टि पंचांग से या किसी भी हिन्दू कैलेण्डर से आसानी से की जा सकती है।

उत्तरायण की परिभाषा

सूर्य के भ्रमण पथ को दो भागों में बांटा गया है जिन्हें क्रमशः उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण की शुरुआत सूर्य के अपने भ्रमण पथ पर उत्तर की ओर अग्रसर होने से होती है। इसी उत्तरायण की शुभता का हमारे शास्त्रों में भी व्याख्यान है।

जैसे, श्रीमद् भगवद्गीता में उत्तरायण को प्रकाश मार्ग भी कहा गया है। प्रकाश मार्ग को सांसारिक कार्यों के लिये शुभ माना गया है। श्रीमद् भगवद्गीता के अध्याय आठ श्लोक 26 में इसका महत्व भी वर्णित है कि जिस व्यक्ति के प्राण उत्तरायण के शुक्ल पक्ष में जाते हैं उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है, अर्थात उसकी मृत्युलोक में वापसी नहीं होती। आपको महाभारत का प्रसंग तो पता ही है कि भीष्म पितामह को स्वेच्छा से प्राण त्यागने का वरदान प्राप्त था। युद्ध के दौरान मृत्युतुल्य अवस्था में आने के पश्चात भी उन्होंने सूर्य के उत्तरायण में आने की प्रतीक्षा की थी जिससे उन्हें मोक्ष प्राप्त हो सके।

आइये, प्रकाश मार्ग या उत्तर की ओर अग्रसर होने की परिभाषा को हम खगोलीय दृष्टिकोण से देखते हैं। यह तथ्य सर्वविदित एवं निर्विवादित है कि बसंत संपात 21/22 दिसम्बर को होता है (Lahiri's Ephemeris) और इस दिन के दिनमान (सूर्योदय से सूर्यास्त की अवधि) की अवधि सबसे छोटी होती है और इसके पश्चात् दिन बढ़ते रहते हैं। खगोलीय दृष्टिकोण से यह सूर्य की भ्रमण दिशा बदलने से होता है। अर्थात, सूर्य के अपने भ्रमण पथ पर उत्तर की ओर अग्रसर होते ही दिन बड़े होने शुरू हो जाते हैं। इसीलिये, इस मार्ग का नाम प्रकाश मार्ग हुआ होगा। पृथ्वी का भ्रमण पथ (ज्योतिषीय भाषा में सूर्य पथ) सृष्टि के आरम्भ से यही था और सदैव यही रहेगा।

4. उत्तरायण और मकर संक्रांति के आरंभिक बिंदुओं की तुलना

वैदिक हिन्दू ज्योतिष में हम निरयन पद्धति का अनुसरण करते हैं। इसमें, जैसा ऊपर वर्णित है, मेष का प्रथम बिंदु चित्रा नक्षत्र के विपरीत है। इस चित्रा नक्षत्र के सापेक्ष स्थिर प्रारंभिक बिंदु को 22 March, 285 AD को बसंत सम्पात पर माना गया था और जब सूर्य ने 9 राशियों को भोगने के पश्चात मकर में प्रवेश किया तो वह बिंदु मकर का प्रथम बिंदु था और वही बिंदु Winter Solstice बिंदु भी था।

निरयन पद्धति में इस बात की भी पुष्टि हो चुकी है कि यह मेष राशि बिंदु, चित्रा तारे के सापेक्ष तो स्थिर है, परन्तु जब पृथ्वी एक साल की सूर्य परिक्रमा करने के पश्चात पुनः उसी स्थान पर आती है तो वह पूर्व वर्ष की तुलना में 50.29" सेकंड पश्चिम की ओर खिसक जाती है। इस पीछे खिसकने को अयन कहते हैं और इसी से अयनांश की गणना होती है। अयनांश, निरयन पद्धति में लग्न एवं ग्रहों के सही भोगांश निकालने के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके अभाव में तो कुंडली ही गलत बन जायेगी।

इसका अर्थ यह हुआ कि 285 AD में जो मेष बिंदु था वह पूर्व वर्ष की तुलना में 50.29" पीछे जाते–जाते 1–Jan–2015 तक $24^0 04' 05"$ पश्चिम की ओर खिसक चुका है, इसकी पुष्टि भी आप किसी भी ephemeris या पंचांग से कर सकते हैं। इससे यह अर्थ निकला कि समय के साथ–साथ यह अंतर बढ़ता ही रहेगा और लगभग $(360^0 - 24^0) = 336^0 = 1209600'' \div 50.29'' =$ 24,000 के पश्चात पुनः मकर बिंदु अपनी 285 AD वाली स्थिति पर आएगा और लगभग 24000 वर्ष पहले भी इसी मेष बिंदु पर रहा होगा।

अगर हमें यह तथ्य मान्य है कि निरयन पद्धति में मेष बिंदु प्रति वर्ष, उपरोक्त वर्णित गति के अनुसार, खिसकता है तो मकर एवं अन्य बिंदु भी तो स्वतः ही खिसक जायेंगे, यह बात स्वयं ही सिद्ध हो जाती है।

अर्थात, सूर्य का भ्रमण पथ तो स्थिर है और स्थिर ही रहेगा परन्तु राशि बिंदु प्रतिवर्ष लगातार खिसक रहे हैं।

उत्तरायण और मकर संक्रांति बिंदु एक नहीं हैं

उपरोक्त परिभाषा और वर्णन से यह निष्कर्ष निकल रहा है कि सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से मकर संक्रांति निर्धारित होती है और सूर्य के उत्तर की ओर अग्रसर होने से उत्तरायण की शुरुआत निर्धारित होती है। 285 AD में ये दोनों बिंदु एक ही थे और इसीलिये तब से आज तक मकर संक्रांति के साथ–साथ उत्तरायण का महत्व भी जुड़ गया है। समय के साथ–साथ, विषुव अयन के कारण, इन दोनों बिन्दुओं में अंतर आता गया। आइये, इस निष्कर्ष की पुष्टि पौराणिक महाभारत से भी करें।

महाभारत युद्ध आरंभ का दिन मार्गशीर्ष मास की अमावस्या (महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित, प. रामनारायण दत्त शास्त्री द्वारा अनुवादित, गीता प्रेस

गोरखपुर द्वारा प्रकाशित महाभारत के तृतीय खंड, अध्याय 142, पृष्ठ 2421, श्लोक 16–17–18) तय किया गया था। मार्गशीर्ष मास को 'सौम्य' मास माना जाता था क्योंकि इस मास में पशुओं के लिये घास और लोगों के लिये खाने–पीने के पदार्थ प्रचुर मात्रा में मिल जाते थे। इसके अतिरिक्त, सेना के आवागमन में कोई परेशानी नहीं होती थी क्योंकि रास्ते कीचड़–मुक्त होते थे।

युद्ध मार्गशीर्ष की अमावस्या से शुरू होकर अगर अठारह दिन चला तो पौष की शुरुआत में समाप्त हुआ होगा। भीष्म पितामह युद्ध के दसवें दिन बाण–शय्या पर आ गए थे और उन्होंने अपना देह त्यागने के लिये सूर्य के उत्तरायण होने की काफी प्रतीक्षा की थी (महाभारत खंड 5, अध्याय 47, पृष्ठ 4532, श्लोक 3)। प्राचीन समय से ही भीष्म पितामह के निर्वाण–दिवस को भीष्म अष्टमी या माघ शुक्ल अष्टमी से मनाया जाता है और यह सभी आधुनिक पंचांगों (श्रीविश्वविजय–पंचांग 2015–16, पृष्ठ 125) में प्रकाशित होती है। वर्ष 2015 में यह 27 जनवरी को थी और वर्ष 2016 यह 15 फरवरी को होगी।

उपरोक्त तथ्यों को अगर समझने का प्रयास करें तो युद्ध शुरू हुआ मार्गशीर्ष की अमावस्या को, 10 वें दिन भीष्म पितामह बाण–शय्या पर आये यानि मार्गशीर्ष के अंत के पास, युद्ध समाप्त हुआ पौष के शुरू में। पंचांग के अनुसार मकर संक्रांति होती है पौष माह में और भीष्म ने माघ की शुक्ल अष्टमी को प्राण त्यागे (बाण–शय्या पर आने के लगभग 28 दिन पश्चात)। अगर पौष में ही मकर संक्रांति होती तो भीष्म को माघ शुक्ल अष्टमी तक इन्तजार करने की क्या आवश्यकता थी? इसका एक ही अर्थ है उस समय मकर संक्रांति और उत्तरायण बिंदु अलग–अलग थे। जैसे, Drik Panchang के अनुसार वर्ष 1600 में मकर संक्रांति 9 जनवरी को थी, आजकल 14/15 जनवरी को होती है और वर्ष 2600 में 23 जनवरी को होगी। अर्थात, मकर संक्रांति बिंदु और उत्तरायण बिंदु अलग–अलग हैं और इनको एक दूसरे से जोड़ना उचित या तर्कसंगत नहीं लगता।

निष्कर्ष यह है कि उत्तरायण से सम्बंधित शुभ कार्यों की शुरुआत उत्तरायण के आरम्भ से होनी चाहिये जो कि बसंत संपात बिंदु है और मकर संक्रांति से सम्बंधित कार्यों की शुरुआत सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से।❑

पता : बी–301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका,
नयी दिल्ली –110075
दूरभाष : 9810162371

जनवरी मास के प्रमुख व्रत त्योहार

शनैश्चरी अमावस्या (9 जनवरी) : शनिवार के दिन अमावस्या का संयोग होने से इसे शनैश्चरी आमावस्या कहा जाता है। इस दिन स्नान, दान, श्राद्ध, तर्पण करने से विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है। गंगा अथवा गंगा जैसी पवित्र नदियों के तीर्थ स्थलों पर स्नान, दान, पूजा का कई गुणा पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

मकर संक्रांति (14 जनवरी) : सूर्य जब मकर राशि पर संक्रमण करते हैं उसे पुण्य काल माना जाता है। सौरमान के अनुसार इस दिन माघ का महीना भी प्रारंभ होता है। इस संक्रांति को विशेष रूप से तीर्थराज प्रयाग में स्नान, गंगा सागर तथा गंगा में स्नान करने का विशेष माहात्म्य है। इसके अतिरिक्त इस दिन तिल, गुड़, वस्त्र, आदि का दान करने से अत्यंत पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी व्रत (20 जनवरी) : पौष शुक्ल एकादशी को पुत्रदा एकादशी का व्रत किया जाता है। विधि तथा नियम, संयम पूर्वक व्रत करने से उत्तम पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पंचज्ञानेन्द्रिय तथा पंच कर्मेन्द्रिय और मन इन ग्यारह इन्द्रियों के नियम, संयम पूर्वक जो व्रत किया जाता है उसे एकादशी व्रत कहते हैं।

संकट चौथ व्रत :(27 जनवरी) जिस दिन चंद्रोदय के समय चतुर्थी तिथि व्याप्त हो, इस दिन गणेश जी की षोडशोपचार पूजा करके, नैवेद्य में लड्डुओं का विशेष भोग लगाना चाहिए। ऊँ गं गणपतये नमः मंत्र का जप करें एवं रात्रि में चंद्रोदय के समय चंद्रमा को अर्घ्य दें, इस व्रत को करने से श्री गणेश जी की कृपा से मानसिक, शारीरिक कष्टों का निवारण होता है।